उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्वरूप

डॉ. दीपक कुमार
रूड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

भारतवर्ष के उत्तरी सीमान्त हिमालय की गोद में अवस्थित उत्तराखण्ड प्रदेश जिसे पौराणिक ग्रन्थों में देवभूमि, हिमवत् प्रदेश, मानसखण्ड, केदारखण्ड, कुर्माचल एवं स्वर्गभूमि की संज्ञा से सुशोभित किया गया है। प्राचीनकाल से ही इस पावन भूमि के प्राकृतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश ने अनेक मानव जातियों, ऋषि, मनीषियों, तीर्थयात्रियों, प्रकृति प्रेमियों एवं पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यहाँ की भौगोलिक संरचना एवं विविधता भी अपने आप में विशिष्ट स्थान रखती है। जोकि आज भी अनेक पर्यटकों एवं तीर्थ यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। हिमालय में स्थित विश्व प्रसिद्ध धाम गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ एवं केदारनाथ में प्रत्येक वर्ष लाखों तीर्थयात्री आस्था एवं विश्वास के साथ इस पावन तीर्थभूमि आकर धर्म एवं आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने हेतु यहाँ पहुँचते हैं। अनादि काल से इस देवभूमि हिमालय में अनेक देवी–देवताओं एवं ऋषि–मुनियों ने कठोर साधना करके इस पावन पुण्य क्षेत्र को प्राप्त किया था। यह वही तीर्थभूमि है जहाँ उत्तराखण्ड हिमालय का सम्पूर्ण क्षेत्र देवताओं एवं ऋषि–मुनियों की तपोभूमि व निवास स्थली है। इसी क्षेत्र को वेदों, पुराणों, महाकाव्यों, में अनेक नामों से महिमामण्डित किया गया है।

वर्तमान के जिस भू–भाग को हम उत्तराखण्ड (उत्तरांचल) नाम से जानते हैं। इस क्षेत्र के अन्तर्गत गढ़वाल व कुमाऊं दो मण्डल हैं। जिसमें प्रथम खण्ड "गढ़वाल" नामकरण पीछे छिपे रहस्य को उजागर करते हुए प्रायः सभी विद्वानों का मत है कि इस क्षेत्र में "बावन छोटे–छोटे गढ़ होने से इस क्षेत्र का नाम गढ़वाल पड़ा। इन गढ़ों पर अनेक जाति के राजाओं का शासन हुआ।

पं. हरिकृष्ण रतूड़ी ने गढ़वाल के इतिहास में बावन (52) गढ़ों का उल्लेख किया है। जहाँ तक इन बावन गढ़ों का सम्बन्ध है।, ये बहुत प्राचीन हैं और "प्राचीन ग्रन्थों में गढ़वाल को तपोभूमि, बद्रीकाश्रम, केदारखण्ड, हिमवन्त प्रदेश कहा गया है। पुराणों में केदारखण्ड को स्वर्गभूमि की संज्ञा दी गयी है।" इसी प्रकार से कुमाऊं नामकरण के पीछे राहुल सांकृत्यायन, त्रिलोचन पाण्डेय व बद्रीदत्त पाण्डे के कुमाऊं के इतिहास में धार्मिक मतानुसार भगवान विष्णु के द्वितीय अवतार कुर्म के नाम से इस क्षेत्र का नाम कुर्मांचल या कुमाऊँ पड़ा। पुराणों में "गंगाद्वार (हरिद्वार) से लेकर श्वेत पर्वत हिमालय तक तथा तमसा (टोंस) से वौद्धांचल (बधाण) तक के क्षेत्र को "केदार खण्ड" व इसके पूर्वी क्षेत्र व काली शारदा के क्षेत्र को "मानस खण्ड" कहा गया है। पुराणों में स्कन्द पुराण के चालीसवें अध्याय केदारखण्ड के अन्तर्गत हिमालय को पांच खण्डों में बांटा गया है।

स्कन्द पुराण के चालीसवें अध्याय में "केदारखण्ड" की लम्बाई पचास योजन और चौड़ाई तीस योजन बतायी गयी है। जिसके पूर्व कुर्माचल की सीमा पर स्थित बौद्धाचल पर्वत, उत्तर में विशाल हिमालय (जलंधर खण्ड) और दक्षिण में गंगाद्वार (हरिद्वार) का क्षेत्र सम्मिलित है। वर्तमान समय में केदारखण्ड के अन्तर्गत गढ़वाल मण्डल में चमोली, टिहरी, उत्तरकाशी पौड़ी, रूद्रप्रयाग, देहरादून व हरिद्वार जिले हैं। कुर्मांचल या मानस खण्ड के अन्तर्गत कुमाऊं मण्डल में चम्पावत, बागेश्वर, अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़ व ऊधमसिंहनगर आदि जिले हैं। इनमें मानस खण्ड (कुर्माचल) कुमाऊँ व केदारखण्ड (गढ़वाल) मिलकर उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक सीमा को दर्शाते हैं। इसके अन्तर्गत 13 जिलों का समावेश हुआ है। केदारखण्ड ग्रन्थ में गढ़वाल मण्डल की लम्बाई पचास योजन (150 मील) के बराबर व चौड़ाई तीस योजन (लगभग 90 मील) के बराबर मानी गयी है।

बद्रीदत्त पाण्डेय के कुमाऊं प्रान्त से जिस मुल्क या प्रदेश का बोध होता है, वह अल्मोड़ा व नैनीताल के पहाड़ी जिले हैं। इस समय का परगना काली कुमाऊं में गंगोली और चौखर्गा भी शामिल हैं। वर्तमान समय में कुमाऊं के उत्तर में तिब्बत, पूर्व में नेपाल, पश्चिम में गढ़वाल और दक्षिण दिशा में मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत, बरेली आदि जिले हैं। ये उत्तराखण्ड की भौगोलिक सीमा को दर्शाते हैं।

उत्तराखण्ड अपनी प्राकृतिक सुन्दरता व संपदा के लिए जितना विश्व विख्यात है, उतना ही यहाँ की ऐतिहासिक परम्परा भी अपने आप में विशिष्ट स्थान बनाये रखती है। प्राचीन काल से ही उत्तराखण्ड की धरती पर अनेक मानव जातियों का आवागमन तथा निवास स्थान रहा है। जिन्हें हम प्राचीन मानव या प्रागैतिहासिक मानव कहना उचित समझते हैं।

उत्तराखण्ड में प्राचीन काल से ही किन्नर, कोल, किरात, गन्धर्व, भील, तंगण व खस आदि प्राचीन मानव जाति निवास करती रही है। विभिन्न इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों के आगमन से पूर्व भारत में अनेक प्राचीन जातियां आ बसी थी। यहाँ प्राचीन मानव जातियों के लिए सभी मूलभूत आवश्यकतायें सघनवन, फल–फूल, नदियाँ, गुफायें, वन्यजीव व स्वस्थ जलवायु आदि पर्याप्त वातावरण था। अनेक लेखों व पुराणों ग्रन्थों के प्रमाण से यह विदित होता है कि उत्तराखण्ड प्राचीन मानव की शरण स्थली रही है। प्राचीन मानव जाति के विषय में पं. राहुल सांकृत्यायन ने वर्णन किया है कि यहाँ पर किन्नर व किरात जातियां प्राचीनकाल से ही रहती थीं। किन्नर–गन्धर्वों का विवरण वैदिक काल से भी पूर्व का माना जाता है। इन साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि यहाँ पर अनेक जातियों का आवागमन रहा है। यहाँ पर कई जातियां आयी व कई जातियां यहां से बाहर गयी होंगी। परन्तु प्राचीन जातियां यहां पर आकर यहीं के लोगों से मिलकर एक हो गयी।

उत्तराखण्ड के प्राचीन निवासियों के बारें में पुराणों, रामायण व महाभारत आदि ग्रन्थों में अनेक रोचक गाथाएं मिलती हैं। ये गाथाऐं प्राचीन काल से ही लिपिबद्ध होने से पूर्व भी मौखिक रूप से भी प्रचलित रही हैं।इन घटनाओं का मूलरूप का पता लगाना बड़ा जटिल हो गया था, क्योंकि ये घटनायें मिश्रित एवं परिवर्तित हो गयी थी। लेकिन पुराणों, महाभारत, रामायण में विभिन्न राजवंशों का इतिहास किसी न किसी रूप में ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। पुराणों में उत्तराखण्ड के प्राचीन भू–भाग का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। ब्रह्मपुराण, वायुपुराण में यहाँ नाग, विद्याधर, किन्नर व यक्ष आदि जातियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन जातियों में साधारण मनुष्यों से ज्यादा शक्ति थी। ये अपनी इच्छानुसार अपना रूप बदल देते थे। लेकिन इनका रूप रंग मानवों जैसा था। इनमें अप्सरायें जो कि स्वच्छंद विचरण करने वाली तथा ऋषि–मुनियों की तपस्या को भंग कर देती थी। इन्हीं में सिद्धों व सुपर्णो का निवास स्थान हिमालय के गन्धमादन के आसपास था। यहां पर 'यक्ष' जाति बड़ी शक्ति सम्पन्न व अनेक प्रकार के अस्त्र–शस्त्र धारण करने वाली थी। ये वेतगिरि व मन्दरांचल पर्वत पर रहते थे। आज भी उत्तराखण्ड के कई क्षेत्रों का नाम इन प्राचीन जातियों गन्धर्व, किरात, कोल, भील, तंगण, खस, दरद आदि के नाम से चलता है।

उत्तर वैदिक काल में आर्यों के छोटे–छोटे राज्य थे। इनमें दो वंश प्रसिद्ध हुए। पहला मानव (मनु) से सूर्यवंश, दूसरा ऐल या चन्द्रवंश। सूर्यवंश के प्रथम राजा मनु का पुत्र इक्ष्वाकु हुआ। इक्ष्वाकु के वंशज कोशल देश के राजा हुये। मान्धाता जो सूर्यवंश के प्रतापी राजा थे। उन्होंने उत्तर भारत को जीतकर कौशलराज्य बनाया था। इसी वंश में सगर, भगीरथ, दिलीप, रघु, दशरथ और रामचन्द्र आदि प्रतापी राजा हुये।

वर्तमान उत्तराखण्ड में सूर्यवंशी राजाओं का उल्लेख यहां के मन्दिरों व भागीरथी, देव गंगा आदि पवित्र नदियों से भी मिलता है।

दूसरा चन्द्रवंश के प्रथम राजा पुरूरवा थे। इनकी चौथी पीढ़ी में ययाति हुए। इनके पांचों पुत्रों ने पांच वंश चलाये। इनमें यदु से यादव व पुरू से पौरव वंश हुए। इसी शाखा के प्रतापी राजा भरत हुए। इन्हीं के नाम से हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा 'आर्यावर्त' से भारतवर्ष नाम देने वाले भरत का जन्म शकुन्तला के गर्भ से हुआ। शकुन्तला एक खश जाति की कन्या थी। इतिहासकारों का मानना है कि शकुन्तला का जन्म कण्व ऋषि के आश्रम मालिनी के तट पर कोटद्वार शहर के निकट कण्वाश्रम (गढ़वाल) नामक स्थान पर हुआ। इसी स्थान पर प्रतापी व पराक्रमी राजा का जन्म व क्रीड़ा स्थली है। भारतवर्ष का नाम देने वाला यह उत्तराखण्ड (गढ़वाल) का ही पुत्र था। इस पौराणिक काल का वर्णन रामायण व महाभारत ग्रन्थ में मिलता है। भरत की काल–गणना लगभग 2250 ईसा पूर्व व रामचन्द्र का काल 1900 ईसा पूर्व मिलता है।

कुमाऊं का इतिहास में उल्लेख किया गया है कि कोसी के निकट अशोक वृक्षों का एक वन है। मुनि विश्वामित्र के कहने पर एक बार राम, लक्ष्मण व सीता यहाँ आये थे। सीता जी इस सुन्दर वन को देखकर अति प्रसन्न हो उठी। उन्होंने श्रीराम से कहा, "हमको बैसाख के महीने में इस वन में रहना चाहिए। कौशिकी में स्नान करना चाहिए।" वे बैशाख के महीने यहाँ रहे और बाद में अयोध्या की ओर चले गये।

रामचन्द्र जी ने वृद्धावस्था में देवप्रयाग (गढ़वाल) में आकर तपस्या की थी। आज भी देवप्रयाग में अलकनन्दा व भगीरथी के संगम स्थल पर रघुनाथ जी का प्राचीन मन्दिर है। लोग आस्था से इस मन्दिर में पूजा–अर्चना करने आते हैं। देवप्रयाग से जुड़ी पट्टी सितोनस्यूं है। इस पट्टी के अन्तर्गत फलस्वाड़ी गांव में एक स्थान पर इगास के दूसरे दिन 'मनसार' का मेला लगता है। मेले की कथा यों है कि "जब राम चन्द्र जी ने सीता को निर्वासित कर दिया था, तो लक्ष्मण सीता को विदा कुटी तक छोड़ आये थे।" यह कुटी देवप्रयाग से लगभग 02 मील दूरी पर है। सीता को छोड़ने पर लक्ष्मण स्वयं मूर्छित होकर धरती पर गिर गये थे। आज भी देवल गांव में लक्ष्मण का मन्दिर है। इस मन्दिर में लक्ष्मण की उतानावस्था (उताण्यां) मूर्ति है। इसके आस–पास 11–12 छोटे–छोटे मन्दिर हैं। सीता इसी स्थान पर रहने लगी थी। वर्तमान कोट महादेव के समीप वाल्मिकी का आश्रम था। जब राम ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा छोड़ा, तो यही से गुजरा और लव–कुश ने उसे पकड़ लिया। तब राम निर्वासित सीता को अपनाना चाहते थे, किन्तु सीता धरती की गोद में समा गयी। अन्त में राम के हाथ केवल सीता के बाल आये थे। आज भी प्रतिवर्ष फलस्वाडी गांव में मनसार मेला लगता है। लोग श्रद्धा से सीता के बालों के रूप में "बाबला घास" प्रसाद के रूप में अपने–अपने घरों को ले जाते है। सितोनस्यूं की देवी सीता होने से इस पट्टी का नाम 'सीता वन–स्यूँ' सीता माता के नाम से ही पड़ा।

पुराणों के अनुसार रामचन्द्र के वनवास जाने के पश्चात् गुरू वशिष्ठ अपनी पत्नी अरून्धती को लेकर हिमदाय नामक पर्वत की गुफा में रहने लगे थे। जब रामचन्द्रजी वनवास से अयोध्या आये, तो मुनि वशिष्ठ भी वापस उनके साथ अयोध्या चले गये। आज भी विसोन नाम पर्वत हिमदाउ (टिहरी गढ़वाल) मे वशिष्ठ गुफा व वशिष्ठ कुण्ड है। यात्री यहाँ पर दर्शन करने के लिए आते हैं।

इन प्रमाणों से रामायण काल की पुष्टि होती है। इसके अलावा रामचन्द्रजी के पश्चात् यादवों व पौरवों की वृद्धि हुई। पौरवों के समय पांचाल उत्तर भारत का सर्वप्रधान राज्य हुआ करता था। इसी वंश के आगे धृतराष्ट्र व पाण्डु के पांच पुत्र कुन्ती व माद्री से हुए। कौरवों व पाण्डवों में बचपन से ही शत्रुता हो गयी थी। यह शत्रुता इतनी बढ़ी कि महाभारत का भीषण युद्ध छिड़ गया। जिसमें श्रीकृष्ण भगवान की विशेष भूमिका रही।